समकालीन हिन्दी कविता और नारी

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

समकालीन हिन्दी कवियों ने नारी के आस्थामय व्यक्तित्व को प्रधानता दी है इन्होंने नारी के भव्य विशाल गरिमामय रूप को स्थापित किया है। समकालीन हिन्दी कविता में नारी का आस्थावादी स्वर, मानवीय व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा नारी जागरण आदि भारतीय सांस्कृतिक चेतना की देन है। सांस्कृतिक पुनरूत्थान का यह प्रभाव समकालीन हिन्दी कविता की कतिपय पौराणिक आस्थामूलक कृतियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। धर्मवीर भारती की कविता 'कनुप्रिया' में राधा के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा नारी जागरण का प्रतीक है। इसमें महायुद्ध (के टूटते हुए व्यक्तियों की कथा 'कनुप्रिया' की मुख्य संवेदना है। इसमें राधा के लिए कृष्ण से वियुक्त हो जाना ही एक दुःखद घटना नहीं बल्कि वह इतिहास से अलग हो जाने के कारण भी अपनी दीनता अनुभव करती है। वास्तव में 'कनुप्रिया' की राध की संवेदना समूचे नारी वर्ग की संवेदना है जिन्हें अपने समर्पण का कुछ भी प्रतिदान नहीं मिल पाता। स्त्रियों के सहयोग से पुरुष महिमावान बन जाते हैं, किन्तु उनके महान बनने में स्त्रियों का क्या कुछ नहीं मिट जाता, उसकी थोड़ी भी पहचान पुरुषों के मन में नहीं रहती। इसलिए भारती की कनुप्रिया कविता की धारा सीधे रूप से कृष्ण से प्रश्न पूछती है।

तुम्हारे महान बनने में
क्या मेरा कुछ टूटकर बिखर गया है कनु।
सुनो कनु सुनो
क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
लीलाभूमि और युद्ध क्षेत्र के
अलंघ्य अंतराल में।

अर्थात् राधा ने कृष्ण को बनाने में अपने आपको भुला दिया था, उसने सोचा तक नहीं कि उसकी कृष्ण से पृथक् सत्ता भी हो सकती है, लेकिन कृष्ण ने इतिहास में उसे अपने साथ नहीं जोड़ा और तब राधा के मन में यह प्रश्न कौंधता है। सचमुच राधा की निश्चित हानि के मूल्य पर कृष्ण ने महानता अर्जित की है। यह धारणा कनुप्रिया की राधा में, अपूर्व आत्मबोध और आत्मविश्वास का संचार करती है और राधा के मन में आत्मगौरव की भावना समकालीन आधुनिक नारी के मन की भावना है आज की नारी अपने मूल्य एवं महत्व से अनभिज्ञ नहीं। इसलिए पुरुषों के प्रति समर्पित होकर भी बौद्धिक धरातल पर अपने व्यक्तित्व की पृथकता बनाये रखने को वह हर क्षण सचेत रहती है।

समकालीन हिन्दी कविता में नारी मनोभाव में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलते हैं, अपनी मर्यादा एवं सीमा को उन्होंने एक नये रूप में उपस्थित किया है बेकार के संकोच में पड़कर वे अपने विकास को अवरुद्ध नहीं करना चाहती। विश्व में नारी ने प्रगति के क्षेत्रों में अपना सम्पूर्ण योगदान दिया है, परन्तु भारतीय नारी ने अपनी हीनता की स्थिति को अनुभव किया। एक तो उनकी अपनी संकोची प्रवृत्ति, दूसरे पुरुषों का कठोर अनुशासन इन सबने उसे भीरू बना दिया और युग की परिस्थितियों ने उन्हें शक्तिशाली बनने को बाध्य किया। उनके मन की भीरूता जब

समाप्त हो गई तब पुरुषों का नियंत्राण उन्हें कब तक बांधे रखता ? उन्होंने अपने दृष्टिकोण को विस्तृत और इस नये दृष्टिकोण में उनकी भावी प्रगति के चिह्न स्पष्ट होने लगे और परम्परा के प्रति उनके मन का विद्रोह कविता के माध्यम से स्वयं स्पष्ट होने लगा।

आपने समझाया : मेरा परिवेश सीमित है
इसलिए मेरे कवि को गति मति कम है।
अदालत अगर इजाजत दे तो कुछ अपनी बात भी कहूँ
आखिर नारी होकर, नारी होने को कब तक सहूँ।

भारतीय नारियों ने तो सदियों तक प्रतीक्षा की है कि स्थितियाँ अनुकूल हों उनके कष्ट एवं बलिदान की कहानी इतिहास में स्थान पाए और पुरुष वर्ग का नजरिया उनके प्रति सहानुभूतिपूर्वक एवं अनुकूल हों। लेकिन इन सारी अपेक्षाओं के बदले अपमान तिरस्कार, लांछन की भागीदारी ही वे बनाई गई। इतना ही नहीं जो कुछ भी अत्याचार उन पर किए गए उसे नकार दिया गया। यह सब देख–सुनकर नारियों का दबा आक्रोश फूट पड़ा और वे चुनौती भरे स्वर में कह उठती है।

शब्द नहीं है किसी के पास, आंसू तक नहीं हैं
अवचेतन से भी उसे, अनछुआ कर पाने की सतत् प्रक्रिया जारी है
पर नारी का कोई आँसू, कोई अपमान बंध नहीं हुआ है।
इतिहास उसका भी साक्षी है। उसकी हर पीड़ा प्रसव पीड़ा बनी है
हर नयी क्रांति, हर नया युग, हर नया देश, उसी से जनमा है।

आधुनिक युग में बढ़ते बुद्धिवाद ने भावना की शक्ति को बहुत कम कर दिया है। आज के इस संघर्षवादी युग में जीने वाली नारियों को अपनी अस्मिता बनाये रखना बहुत अधिक जरूरी हो गया है इसलिए वे भावना विगलित होकर कर्मक्षेत्र से पलायन नहीं करती बल्कि संघर्षों में ही अपने जीने के रास्ते को बनाती है। इसीलिए समकालीन कवियों ने नारीत्व की सफलता की कामना की है। स्त्रियों की बढ़ती शक्ति के प्रति कविगण आशान्वित है आज अर्थोपार्जन की स्वतंत्रता प्राप्त कर नारियों ने सचमुच बहुत बड़ी प्रगति की है। इस सिलसिले में उन्होंने घर से बाहर कदम रखा है और बाहर की उन्मुक्त ताजी हवा उनके विकास के लिए भी आवश्यक है लेकिन बाहरी परिवेश में आकर वे घर को भुला नहीं देती घर और बाहर में संतुलन बनाये रखना ही भारतीय नारियों का आदर्श है। उनका विकास पाश्चात्य देशों की तरह नहीं जहां पर नारी का घर–परिवार है ही नहीं पाश्चात्य मूल्यों को अपनाकर जीनेवाली नारियों को दिनकर ने हृदय के अधिवास से बहिर्गत माना है। इसलिए पुरानी मान्यताएँ ठुकराकर चलने वाला नया कवि भी पश्चिम की बात अपने देश के लिए नहीं सोचता। हमारी भारतीय आदर्श की एक खास पहचान है जिसमें नवीनता के भी उसी रूप का आग्रह है जिसमें प्राचीनता को बिल्कुल नकारा न गया है परंतु कुछ आधुनिक कवि भारतीय नारी को युरोपीयन नारी बनाना चाहते हों, परंतु ऐसी नारी मुक्ति तो बन्धन से भी गई–बीती है।

देवी को दानवी बनाकर छोड़ेगा
भारत को यौरुप बनाकर छोड़ेगा
इससे भी ज्यादा और होगी क्या पतन की बात
देशमुख कहते हैं परदेश की बात।

आज की समकालीन हिन्दी कविता में नारी बहुत अधिक सशक्त बनकर उभरी है अब वह युग नहीं रहा कि पुरुषों की मनमानी चलेगी एक बार

आजाद होकर फिर कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उन्हें उनकी इच्छा के प्रतिकूल ले जा सकती है।

इसलिए आज नारी को अपनी स्वच्छंदता की सही पहचान है। इसलिए वह अपने तय किए हुए मार्ग पर ही आगे बढ़ेगी ताकि दूसरों के लुभाए रास्ते पर। आज की नारी पुरुषों के समान ही क्षमतावान है तो फिर किसी का नियंत्रण क्यों स्वीकार हो और समकालीन कवियों ने भी नारी की इस शक्ति की प्रशंसा की है।

तुम स्वतंत्र, समकक्ष, सबल तुल नर के कूटमंत्र का ध्वंस।
करो करो हे चिरकल्याणी, पहरो क्षमता का अवतंस।

इस प्रकार पुरुषों की उदार मनोवृत्ति ने स्त्रियों का हौंसला भी बढ़ाया। वे नई व्यवस्था के निर्माण के लिए आगे बढ़ीं। ऐसी व्यवस्था में जड़ समाज के सौ बंधनों को तोड़कर ममत्व लाने की बात की गई है।

समता का आजादी का नवइतिहास बनाने को आई,
शोषण की रखी चिता पर तुम तो आग लगाने को आई
है साथी जग का नव यौवन बदलो सब प्राचीन व्यवस्था
वर्ण भेद के बंधन सारे तुम आज मिटाने को आई।

समकालीन नई चेतना के संघर्ष का ही परिणाम है कि कवि के मन में उपेक्षित नारी के प्रति सहानुभूति का भाव जागा। उसके मन में इस बात का पछतावा नहीं है कि शोशित नारी उसके बराबर की अधिकारिणी है और जब नारी से किसी बात की अपेक्षा ही नहीं वह मात्र स्नेह है तब तो बंध में दबाने का सवाल ही नहीं उठता। इसलिए तो कवि उसे अपने समान शक्ति से सम्पन्न एवं स्वतंत्र बनाना चाहता है। समकालीन कवि नारी के एक ऐसे रूप का आकांक्षी है जो अन्याय के सम्मुख अडिग रहकर अपनी प्रतिभा दिखला सके। आधुनिक कवि महेन्द्र भटनागर के अनुसार युग की आवाज प्रेममिश्रित रसमयता में डूबकर उभरती है वह आज की संघर्षमूलक नवचेतना की गहरी और नींव में नए युग की नारी और उसकी जागृत चेतना के दर्शन करते हैं।

अब दबोगी तुम नहीं, अन्याय के सम्मुख,
नई ताकत, बड़ा साहस, जमाने का तुम्हारे साथ है।

इस प्रकार समकालीन कविता में नारी के आस्थामय व्यक्तित्व को प्रधानता दी गई है। नारी के भव्य, विशाल गरिमामय रूप को स्थापित करना इन कवियों का उद्देश्य रहा है। नई कविता का आस्थावादी स्वर, मानवीय व्यक्ति की प्रतिष्ठा, नारी जागरण, आदि भारतीय सांस्कृतिक चेतना की देन है सांस्कृतिक पुनरुत्थान का यह प्रभाव समकालीन कविता पर देखने को मिलता है। आज की यही चिरन्तर नारी आधुनिक अर्थों में मुक्तमना नजर आती है यह मुक्तमना नारी केवल नयी प्रेमास्पदा नहीं जीवनसंघर्ष की सहचरी भी है जो ब्राह्य संघर्ष में पुरुष का हाथ बंटाती है तो अंतःसंघर्ष में यह जीवन को संतुलित भी करती है और सहज कृतज्ञता में पुरुष उसे सम्बोधित करता है।

अब तक तुमने मेरे धीरज को आशा दी,
आशा को दृष्टि, दृष्टि को भी विश्वास
और कर्मों की भाषा दी।
कर्म मैंने किये, तुमने उनके विष पिये,
किन्तु मुझे सदा अमि। पिपासा दी।

अंततः हम कह सकते हैं कि समकालीन हिन्दी कवि नारी के प्रति सिर्फ कृतज्ञता के शब्द ही

निवेदित नहीं करता बल्कि ऐतिहासिक संदर्भों में उसकी सामाजिक भूमिका का आकलन भी प्रस्तुत करता है और अधिकार बोध से समन्वित आधुनिक नारी धीरे–धीरे विद्रोहिनी बन जाती है। अहं का बोध उसे जीवन में अपनी पहचान स्थापित करने को उकसाता है और इस पहचान की स्थापना के लिए वह सारी मान्यताओं से संघर्ष करती है। जो उसे पीछे हटने को बाध्य करती है और समकालीन कवि स्वानुभूतियों के सहारे यथार्थ की वैसी नारी को उपस्थित करता है जो अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष के स्तर तक उतरती है। लेकिन भारतीय नारी का वह संघर्ष मात्र ब्राह्य प्रभाव न होकर आत्मिक चेतना की अनुगूंज से प्रेरित है।

संदर्भ

- रामवचन राय, नई कविता उद्भव और विकास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना, पृ. 7
- अवध नारायण त्रिपाठी, नई कविता में व्यक्तित्व चेतना, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, पृ. 48
- रामवचन राय, नई कविता उद्भव और विकास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी–पटना
- क्षेमचंद सुमन, नारी तेरे रूप अनेक, आत्माराम एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली
- रामस्वरूप, कविता यात्रा, मैकमिलन कम्पनी इण्डिया लिमिटेड पृ. 72
- धर्मवीर भारती, अनुप्रिया भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली, 78–79
- कांति कुमार, नई कविता, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ 34
- सुधा बाला, नारी मुक्ति आंदोलन, निर्मल पब्लिकेशंस शाहदरा दिल्ली–110094
- सरोज वर्मा, छायावादोत्तर हिन्दी कविता में ग्राम्यबोध, निर्मल पब्लिकेशंस दिल्ली–94
- इन्दु जैन, चौंसठ कविताएँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृ. 7
- समकालीन हिंदी कविता और नारी – डॉ. कमल कृष्ण पृ. 155–159
- समकालीनता के अर्थों में हिन्दी कविता – संपादक प्रो. (डॉ.) सुखदेव सिंह सिन्हा

Copyright © 2016, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.